ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

भारत में राष्ट्रवाद : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
Nationalism in India: An Analytical Study

Paper Submission: 12/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

चन्द्रभान
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान
रमाबाई राजकीय महिला
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अकबरपुर, अम्बेडकर नगर,
उत्तर प्रदेश,भारत

सारांश

राष्ट्र की परिभाषा एक ऐसे जनसमूह के रूप में की जा सकती हैं जो एक भौगोलिक सीमाओं में, एक निश्चित क्षेत्र में रहता हों, समान हितों तथा समान परंपराओं से बंधा हो, जिसमें एकता के सूत्र में बंधने का समान राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं हों। राष्ट्रवाद के निर्णायक तत्वों में राष्ट्रीयता की भावना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीयता की भावना किसी राष्ट्र के सदस्यों में पाई जाने वाली सामुदायिक भावना है, जो उनका संगठन सुदृढ़ करती हैं। पश्चिमी विद्वान इस धारणा को मानते हैं कि- ब्रिटिश लोगों के कारण ही भारत में राष्ट्रवाद की भावना ने जन्म लिया, राष्ट्रीयता की चेतना ब्रिटिश शासन की देन है और उससे पहले भारतीय इस चेतना से अनभिज्ञ थे। भारतीय राष्ट्रवाद के अध्ययन के लिए अनेक दृष्टिकोण के मतों को समझना जरूरी है। भारतीय राष्ट्रवाद की प्रक्रिया बड़ी जटिल और बहुमुखी रही है। अंग्रेजों के आने के पहले से भारत की सामाजिक संरचना, संसार के किसी भी अन्य देश से अलग और अनूठी थी। पूर्व मध्यकालीन यूरोपीय समाजों से आर्थिक दृष्टि से भिन्न थी। भारत विविध भाषा-भाषी, धर्म, नस्ल,जाति, भूगोल, संस्कृति और समाजिक वर्गों वाला देश है। ब्रिटिश पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था कृषि और कुटीर उद्योगों पर आधारित थी और यह सदियों से चली आ रही थी। सामाजिक जीवन परिवार, जाति पंचायत और ग्राम पंचायतों द्वारा नियंत्रित होता था। लेकिन अंग्रेजों ने भूमि प्रबंधन, प्रशासनिक सुधार और औद्योगिकरण द्वारा भारत की सामाजिक व्यवस्था को बदल दिया। इससे देश में व्यापक सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन हुआ। एक तरफ ब्रिटिश शासन ने भारतीय संसाधनों का दोहन ब्रिटिश राज को मजबूत करने के लिए किया, वहीं दूसरी तरफ भारत के ग्रामीण और नगरीय व्यवस्था में प्रशासनिक सुधारों की लहर चली। यातायात, शिक्षा, संचार, उद्योग, वित्त, बैंकिंग पूंजी, व्यापार आदि क्षेत्रों पर ब्रिटिश शासन ने व्यापक प्रभाव डाला। एक तरफ ब्रिटिश शासन चरित्र आर्थिक दृष्टि से 'दूरस्थ शोषण कर्ता' के रूप में, तो दूसरी तरफ सामाजिक और राजनीतिक सुधारों दृष्टि से लाभकारी है।

A nation can be defined as a group of people who live in a certain area, within the same geographical boundaries, bound by common interests and common traditions, with common political ambitions to unite. The feeling of nationalism is the most important of the decisive elements of nationalism. The feeling of nationalism is the sense of community found among the members of a nation, which strengthens their organization. Western scholars believe in this belief that – because of the British people, the spirit of nationalism was born in India, the consciousness of nationalism is the result of British rule and before that Indians were unaware of this consciousness. For the study of Indian nationalism, it is necessary to understand the views of many perspectives. The process of Indian nationalism has been very complex and multifaceted. Before the advent of the British, the social structure of India was different and unique from any other country in the world. Economically different from pre-medieval European societies. India is a country with diverse linguistic, religion, race, caste, geography, culture and social classes. The economy of pre-British India was based on agriculture and cottage industries and this had been going on for centuries. Social life was controlled by the family, the caste panchayat and the village panchayat. But the British changed the social system of India through land management, administrative reforms and industrialization. This brought about a massive social, political, cultural and psychological change in the country. On the one hand the British rule exploited the Indian resources to strengthen the British Raj, while on the other hand there was a wave of administrative reforms in the rural and urban system of India. The British rule made a huge impact on the areas of transport, education, communication, industry, finance, banking capital, trade etc. On the one hand the character of British rule as a 'remote

exploiter' from the economic point of view, on the other hand it is beneficial from the point of view of social and political reforms.

मुख्य शब्द राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय आन्दोलन, जातिय समरूपता, समान हित,भाषा, संस्कृति, सम्राज्यवाद, धर्मनिरपेक्ष, उपनिवेशवाद, औपनिवेशिककाल, कुलीन वर्ग, आर्थिक शोषण, राजनीतिक आर्थिक गठजोड़।
Nationalism, national movement, caste homogeneity, common interest, language, culture, imperialism, secularism, colonialism, colonial period, elite class, economic exploitation, political economic alliances.

प्रस्तावना

प्राचीन समय से राष्ट्रवाद की अवधारणा एक आधुनिक अवधारणा है। राष्ट्रवाद के लिए अनेक तत्व होते हैं।लोगों को एक राजनीतिक सत्ता के अधीन लाने के लिए राष्ट्रवाद की अवधारणा का इस्तेमाल प्रमुख रूप से किया जाता है। लेकिन यह भी जरूरी नहीं की एक संगठित राज्य राष्ट्र के रूप में भी स्थापित हो। क्योंकि राज्य राजनीति से जुड़ा है जबकि राष्ट्र संस्कृतित से। इस प्रकार एक राज्य के अंदर अनेक संस्कृतियों हो सकती हैं, और एक संस्कृतिकई राज्यों में फैली हो सकतीहैं। आशीर्वादम- "एक राज्य के अन्दर अनेक राष्ट्रीयताएं विद्यमान हो सकती हैं। राज्य एक राजनीतिक सत्ता से जुड़ा है, जबकि राष्ट्रीयता संस्कृति से जुड़ी अवधारणा है। लेकिन इन दोनों के विकास के लिए एक सी ही परिस्थितियां जिम्मेदार है। अतः इसकी परिभाषा करना दुर्लभ हो जाता है" आधुनिक काल में जो राष्ट्र का विकास हुआ है उसमें विभिन्न जातियों के लोग, वर्गों के लोग, धर्म के लोग राजनीतिक एकता के रूप में संगठित हो गयें हैं जिससे राष्ट्रवाद का विकास हुआ है।"

"राष्ट्रतब वजूद में आता है जब लोग एक राजनीतिक इकाई के रूप में एकत्र हो जाते हैं, चाहे उनके उन्हें अधिकार न मिला हो, बल्कि उन अधिकारों को प्राप्त करने की परिकल्पना करने लगते हैं।"

राष्ट्रतब वजूद में आता है जब लोग एक राजनीतिक इकाई के रूप में एकत्र हो जाते हैं, चाहे उनके उन्हें अधिकार न मिला हो, बल्कि उन अधिकारों को प्राप्त करने की परिकल्पना करने लगते हैं।"

राष्ट्र और राष्ट्रीयता के विकास के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य है जिनमें से किसी को प्रधानता नहीं दी जा सकती हैं-

1. **जाति**- यूरोप में जाति की राष्ट्रीयता का विकास हुआ। लेकिन राष्ट्रवाद के विकास के लिए इसे एक अनिवार्य सत्यन मानकर उसे राष्ट्रवाद के विकास के लिए एक तत्व के रूप में मान सकते हैं।
2. **भौगोलिक एकता** - जैसे - नदियों, पहाड़ों और जल मार्गों द्वारा घिरा प्रदेश एक राष्ट्रीयता के रूप में विकसित हो सकता है। जैसे पाकिस्तान और बांग्लादेश का विभाजन।क्योंकि इनके बीच दूरी थी। उस समय बांग्लादेश पाकिस्तान का हिस्सा था। वह पूर्वी पाकिस्तान के नाम से हुआ करता था।
3. **भाषा-** एक प्रकार की भाषा को बोलने वाले लोग एक राष्ट्र के रूप में विकसित हो जाते हैं। यह भी यूरोप के संदर्भ में ही ज्यादा ही सही है। लेकिन जब हम एशिया और अफ्रीका महाद्वीप में राष्ट्रवाद के लिए सफर करते हैं तो यह ज्यादा महत्वपूर्ण तथ्य नहीं रहा जाता है। जैसे भारत के संदर्भ यहां अंग्रेजी केवल लिंक भाषा थी। जबकि क्षेत्रीय भाषाएं ज्यादा मान्य है।
4. **संस्कृति**-संस्कृतिको लेकर- एक ही तरह के खान-पान, वेशभूषा, एक विचार, आदर्श, मूल्य के लोगों को मिलाकर एक राष्ट्र का विकास होता है।

भारत में जो राष्ट्रवाद पनपा वह यूरोप के राष्ट्रवाद से भिन्न था। यूरोप का राष्ट्रवाद जो पनपा उसने साम्राज्यवाद को जन्म दिया। उसने राष्ट्रीय विकास, भव्यता, शक्ति के आधार पर दुनिया के अन्य देशों पर अपनी संस्कृति और शक्ति को थोपा है और अपनी सीमा का विस्तार किया है। जबकि भारत में जो राष्ट्रवाद पनपा वह साम्राज्यवाद के विरोध में पैदाहुआ। ए०आर०दसाई- इसे प्रतिक्रिया के रूप में नहीं मानते हैं। उनका कहना है कि- यूरोप का समाज सामंतवादी था जबकि यहां की उस समय की स्थितियों ने उस राष्ट्रवाद को जन्म दिया है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अनेक विद्वानों ने इस राष्ट्रवाद के पनपने के लिए पूरी तरह अंग्रेजों को श्रेय दिया है।ए०आर०देसाई केअनुसार - भारत में राष्ट्रवाद आ रहा था, लेकिन भारतीय पूंजीवादी वर्ग ने समझौता कर लिया जिससे भारत में सामान्य वर्ग में राष्ट्रवाद नहीं पनपा।

अध्ययन का उद्देश्य

1. आधुनिक राष्ट्रवाद को परिभाषित करते हुए भारतीय राष्ट्रवाद की व्याख्या करना।
2. भारतीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में प्रचलित विभिन्न सिद्धांतों की समीक्षा करना।
3. भारतीय राष्ट्रवाद का विश्व की अन्य राष्ट्रीयता से तुलना करना।
4. भारतीय राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना।
5. भारतीय राष्ट्रवाद की उन विशेषताओं को उजागर करना जो 'विभिन्नता में एकता' को बल देती हैं।

शोध पत्र परिकल्पना

1- राष्ट्रवाद को परिभाषित करना एवं उनके विभिन्न तत्वों का प्रकाश डालना ।
2- विश्व के विभिन्न राष्ट्रीय राज्यों के उदय से भारतीय राष्ट्रवाद की तुलना करना।
3- भारतीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में प्रचलित विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण करना।
4- भारतीय राष्ट्रवाद के प्रति प्रचलित विभिन्न को स्पष्ट करना।
5- भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए उत्तरदायी तत्वों की समीक्षा करना।
6- अंततः भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप को स्पष्ट करना।

भारत के भौगोलिक परिस्थितियां

1. तीन ओर से समुद्र और एक ओर से विशाल हिमालय की पर्वत मालाओं ने एक भौगोलिक एकता प्रदान की।
2. अमीर खुसरो ने अपनी रचना में कहा कि- भारत के संदर्भ में अनेक भाषाएं थोड़ी थोड़ी दूरी पर बदल जाती है, जबकि फारसी भाषा 4000 मील तक (6000 km.) बोली और समझी जाती है। उस समय फारसी राजसी भाषा थी। इस प्रकार भारत में जो राष्ट्रवाद आया है वह अंग्रेजों की देन नहीं है बल्कि वह परिस्थितियां पहले से विद्यमान थी।
3. बिपिन चंद्रा मानते हैं कि- राष्ट्रवाद जो आया वह अपने पूर्ववर्ती विद्यमान परिस्थितियों के कारण आया है। लेकिन यह अभी निर्माण की अवस्था में है क्योंकि भाषा, वर्ग, क्षेत्र आदि की विभिन्नताएं अभी एकता का रूप नहीं ले पायीं हैं। वह कभी उग्र रूप ले लेती है।

भारत और अमेरिका में राष्ट्रवाद जो आया है उसमें अंतर है।क्योंकि अमेरिका में राष्ट्रवाद प्रोटेस्टेंट के द्वारा अर्थात ईसाई धर्म के विरुद्ध स्थापित धर्मनिरपेक्ष तत्व के द्वारा आया है। जबकि भारत में जो राष्ट्रवाद आया उसमें धर्मनिरपेक्षता पहले विद्यमान रहीं, लेकिन बाद में कट्टरवादी ताकतों ने इसका स्थान ले लिया। इस प्रकार यह राष्ट्रवाद बाद के वर्षों में अपने मूल रूप में धूमिल हो गया है।

भारत में राष्ट्रवाद के विभिन्न दृष्टिकोण

"उपनिवेशवाद के अन्त:क्रिया और प्रतिक्रिया के स्वरूप भारत में जो राष्ट्रवाद पनपा उसे राष्ट्रीय आंदोलन कहते हैं।"राष्ट्रीय आंदोलन ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। लेकिन यह तथ्य ज्यादा महत्वपूर्ण है कि- राष्ट्रवाद से ही राष्ट्रीय आन्दोलन आया। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से देखा है। यह पांच प्रकार का है -

साम्राज्यवादी दृष्टिकोण

साम्राज्यवादी दृष्टिकोण - इस दृष्टिकोण के विद्वानों ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को ब्रिटिश परिपेक्ष्य में परिभाषित किया है। इनमें प्रमुख विद्वान है- जॉन सीले(John seelay) जिनकी पुस्तक- The expansion of England, जॉन स्ट्रैची(John strachey) जिनकी पुस्तक- India, its administration and progress, वैलेंटाइन शिरोल (valentine chirol) जिनकी रचना- Indian unrest-1910, ब्रूस टी मैकुले(Bruce t. Macaulay) जिनकी पुस्तक- English education and the origins of Indian nationalism और अनिल सील जिनकी पुस्तक- the emergence of Indian Nationalism है।
जान सीले ने अपनी पुस्तक में लिखा - "भारत एक राजनीतिक नाम नहीं है, केवल एक भौगोलिक अभिव्यक्ति है, जैसे यूरोप और अफ्रीका। यह किसी देश के क्षेत्रफल या भाषा को संबोधित नहीं करता है, बल्कि यह कई भाषाओं की ओर संकेत करता है।"- (पृष्ठ-28 पर)
जान स्ट्रैची (इंग्लैंड में I.C.S. के नौकरशाहों को पढ़ाता था) के अनुसार - " भारत के विषय में यह समझ लेना आवश्यक है कि यह ना कोई देश है और ना कभी था। यहां यूरोपीय धारणाओं के अनुकूल- भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक एकता है ही नहीं।"(पृष्ठ-5)
इस विचारधारा के निम्न तर्क है -

1. भारत आधुनिक परिभाषा वाला राष्ट्र होने के बजाय मात्र अलग-थलग जातियों, धर्मों और कबीलों का देश है।
2. ऐसी हालत में भारतीय अपना शासन स्वयं संभालने अयोग्य थे।
3. ईश्वरीय वरदान के रूप में अंग्रेज भारत में आए और उन्होंने अपनी जातीय श्रेष्ठता के आधार पर यह देश जीता और आधुनिक प्रशासन व्यवस्था स्थापित की।

4. साम्राज्यवादी इतिहासकार यह मानकर चलें कि- भारत में शांति बनाए रखने, समुदाय के बीच इंसाफ़ करने तथा भारतीय किसानों के मां-बाप के रूप में काम करने के लिए अंग्रेजों का शासन जरूरी है।
5. उन्होंने यह भी समझाने का प्रयास किया कि- अंग्रेजी शासन धीरे-धीरे हिंदुस्तानियों को अपना राज्य स्वयं चलाने को तैयार करने के लिए है।
6. हिंदुस्तान का तथाकथित राष्ट्रीय आन्दोलन वास्तव में पढ़े-लिखे अल्पसंख्यकों (Microscopic minority) का स्वार्थी या गैर जिम्मेदाराना जमघट है।
7. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन जन आन्दोलन नहीं था, बल्कि यह अभिजन वर्ग की जरूरतों एवं उनकी उपज था या तो इन समूहों ने यथास्थिति के लिए या तुच्छ सुधार के लिए इसका प्रयोग एक उपकरण के रूप में किया। राष्ट्रीय आन्दोलन केवल एक उपकरण था, जिसका प्रयोग अभिजनों ने जनता को लामबंद करने एवं अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किया।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

इस विचारधारा के विद्वानों के नाम है- डा० ताराचन्द जिनकी पुस्तक History of Indians freedom movement(||| part -1951), आर०जी० प्रधान जिनकी पुस्तक "India's struggle for Swaraj (मद्रास-1929में),बी०पट्टाभि सीतारमैय्या (1885-1935) जिनकी पुस्तक-the history of Indian National Congress (1935 में मद्रास से प्रकाशित) है। राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को सम्राज्यवादी नीतियों के विपरीत, शोषण के प्रतिक्रिया स्वरूप एक जन आंदोलन माना। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीयता का आधार हमेशा से मौजूद था और इसी आधार को लेकर औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ सभी भारतीयों का एक हो जाना स्वभाविक था। 1857 के पूर्व बंगाल तथा दक्षिण के मैसूर और मद्रास के प्रांतों में अंग्रेजों का तीव्र विद्रोह विरोध हुआ था। 1857 का महाविद्रोह यूरोप के कई राज्यों के क्षेत्रफल से भी बड़ा था। उसे केवल भारतीय राज्यों, महाराजाओं और जमीदारों का विरोध नहीं कहा जा सकता। जनता का प्रत्येक भाग इसमें सम्मिलित हुआ था।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण

इस विचारधारा के विद्वान हैं- रजनी पाम दत्त जिनकी पुस्तक इंडिया टुडे (1948 ई० प्रकाशित), ए आर देसाई जिनकी पुस्तक- "सोशल बैकग्राउंड ऑफ नेशनलिज्म"(1959 में मुंबई से प्रकाशित), इ०एम०एस०नम्बूदरीपाद जिनकी पुस्तक- "हिस्ट्री ऑफ इंडियन फ्रीडम स्ट्रगल"(1986 ई० में त्रिवेंद्रम से प्रकाशित) है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण का मानना है कि -
1- केवल हिंदुस्तान को अंग्रेजों से मुक्त करा देना ही काफी नहीं है, बल्कि आजादी के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन (बराबरी की दिशा में) भी जरूरी है।
2- उन्होंने सांस्कृतिक एकता से ज्यादा जोर वर्गभेद और शोषण पर दिया तथा इन अंतर्विरोधों को नजरअंदाज करने के लिए गांधीवादी राष्ट्रवाद की तीखी आलोचना की। इन्होंने अपने आन्दोलन में उत्पादन पद्धति (mode of production) का अध्ययन करने का प्रयास किया, जिससे उत्पादन संबंध एवं वर्ग संबंध निर्धारित होते हैं। इनके अनुसार- वर्ग संबंधों एवं इनके बीच का अंतर्विरोध समाज का सबसे महत्वपूर्ण विरोध है। सारा इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।

सबाल्टर्न इतिहासकारों के अनुसार-बड़े

विपिन चंद्रा और उनके छात्रों तथा मृदुला मुखर्जी ने मिलकर मार्क्सवादी और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को मिलाकर एक नया दृष्टिकोण दिया जिसे दोनों का सम्मिलित रूप माना जाता है। बिपिनचंद्र एवं साथी विचारको का मत इस श्रेणी के विचारकों का दृष्टिकोण मार्क्सवादी होते हुए भी राष्ट्रवादी है। उनका मानना है कि- भारत राष्ट्रबनने की प्रक्रिया मेंहै। भारत की क्षेत्रीय, भाषाई, प्रजातिय पहचान ही थी। लेकिन इसनें कभी उसके राष्ट्र बनने की प्रक्रिया को अवरूद्ध नहीं किया। इसके ठीक विपरीत राष्ट्रीय अस्मिता के उत्थान के साथ यह छोटी अस्मिताएं भी उठी और इनको एक दूसरे से शक्ति प्राप्त हुई। राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद के अंतर्विरोधों पर आधारित राष्ट्रवाद का विश्लेषण करने वाले बुद्धिजीवी लोग लोग थे और इसे जनता तक पहुंचाना और विशाल जनसमूह के बीच छिपी हुई विशाल उपनिवेशवाद विरोधी चेतना को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

भारतीय राष्ट्रवाद का मूल्यांकन -क्या राष्ट्रवाद के तत्व थे ?

वी०आर०नन्दाने अपने लेख - Essays in modern history- मेंराष्ट्रीय आंदोलन के तीन दृष्टिकोण दिखाएं हैं।वैलेंटाइन शिरोल ने - "इंडियन अनरेस्ट"मेंलिखा -"हम लोग भारत और भारतीय को एक पर्याय के रूप में प्रयोग करने के अभ्यस्त हो चुके हैं जबकि यह तथ्य नहीं है। हम यह भूल जाते हैं कि भारत में यूरोप से ज्यादा विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं और यह भारत में- मराठों और बंगालियों के बीच यूरोप के जनमत और पुर्तगाली जातियों के अन्तर से कहीं ज्यादा अन्तर है। इसी प्रकार पंजाबी और तमिल जातियों में रूस और इटलीकी जातियों के मध्य अन्तर से कहीं अधिक अन्तर है तथा धार्मिक क्षेत्रों में हिंदू और मुसलमानों के बीच यूरोप में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट केबीचसेकहींअधिकअन्तर है। इसी प्रकार जाति व्यवस्था में भारतीय समाज को कितना विभक्त किया है जितना की यूरोप में किसी आधुनिक वर्ग नेनकिया होगा।"-(पृष्ठ-322-323)

आर०सी०मजूमदार ने अपने व्याख्यान में 1960 में इस तथ्य को स्वीकार किया था। मजूमदार राष्ट्रवादी इतिहास लेखन के प्रतिनिधि इतिहासकार माने जाते हैं। अपने व्याख्यानमाला में उन्होंने कहा था कि-"बीसवीं शताब्दी में भारत को एक राजनीतिक और आर्थिक इकाई के रूप में जानने के अभ्यस्त हो चुके हैं। लेकिन हमारे पूर्वज जो ब्रिटिश राज्य में निवास करते थे भारत के लिए एक शताब्दी पूर्व इस अर्थ में अस्तित्व में नहीं था।वे सिक्ख, राजपूत, मराठा, बंगाली, उड़िया, तमिल के रूप में बात करते थे। लेकिन उनके प्रति एक स्पष्ट भारतीय की परिभाषा थी। हमें अपने बिशप- हींवर- के 1824 के उत्तर भारत के यात्रा वृतांतों से ज्ञान होता है कि- उत्तर प्रदेश के लोग बंगालियों को अंग्रेजों की तरह विदेशी समझते हैं।"

हिंदू पादशाही के नारों के बावजूद मराठों ने बिना किसी करूणा के पश्चिम में राजपूतों और सिखों के प्रदेशों पर, पूर्व में बंगालियों पर, दक्षिण के द्रविण प्रदेशों पर तीव्र प्रहार किये। बंगालियों की मनोवृतियों में मराठें केवल विदेशी ही नहीं थे, बल्कि वह घृणित विदेशी थे। मराठों ने अंग्रेजों के साथ एक संयुक्त मोर्चा बनाकर बंगाल पर आक्रमण करना चाहा था। बंगाली,मराठों, अंग्रेजों और दूसरे भारतीय राज्यों के विरुद्ध हर एक विजय पर धार्मिक क्रियाकलापों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करते थे। भारत की कल्पना एक संपूर्ण देश के रूप में केवल प्राचीन युग के साहित्यिक कार्यों में पाई जाती थी और 19वीं शताब्दी के छठवेंऔरसातवेंदशक तक भारत ने व्यावहारिक, राजनीतिक अस्तित्व प्राप्त नहीं किया था।"-[4]

M N Roy ने India is transition(1922 -Geneva) में तथ्यों और आंकड़ों के अनुसार यह बताने का प्रयास किया कि - "भारत एक सामंतवादी समाज न था। वह पूंजीवादी कच्छ में था और उत्पादन के पूंजीवादी पद्धति की ओर तेजी से बढ़ रहा था।"-5 भारत में एक महत्वपूर्ण सामाजिक घटक के रूप में न था बल्कि राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग था। जो सामाजिक परिवर्तन लाने में उतना अधिक क्रांतिकारी नहीं हो सकता था। लेनिन का विरोध करते हुए एम०एन० राय ने राष्ट्रीय बुर्जुआ के संपर्क न बढ़ाकर नए उदित मजदूर वर्ग को आगे रखने का प्रस्ताव रखा था। उनका यह भी मानना है कि- भारत में विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीयताएं में मौजूद थीं। भारत एक महाद्वीप की तरह था। उसे एक संयुक्त राष्ट्रीय इकाई के रूप में नहीं कहा जा सकता था। लेकिन पूंजीवादी समाज ने भारतीयों के आर्थिक विकास को रोकते हुए, भारतीयों पर राजनीतिक एकता लाददी।

प्रश्नहै ? - तो फिर राष्ट्रीय आंदोलन क्यों हुआ जब भारत में राष्ट्रीय तत्व नहीं थे-

मार्क्सवादियों के अनुसार भारत में राष्ट्रवाद के उदय के पीछे नई आर्थिक शक्तियां थीं। प्रथम महायुद्ध तक आर्थिक परिवर्तन का सामाजिक प्रभाव सीमित था।परन्तु युद्ध के कारण पूंजीवादी विकास नें भारतीय राजनीति को साम्राज्यवाद के युद्ध के विरूद्ध आन्दोलन करने के लिए प्रेरित किया। जबकि राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारत में मौलिक आर्थिक परिवर्तनों कोअस्वीकार करके- संस्थागत परिवर्तनों - जैसे अंग्रेजी शिक्षा इत्यादि पर अधिक बल देते

हैं। उनके अनुसार भारत के परंपरागत प्रभुत्व वाले समाज ने अंग्रेजी शिक्षा को तेजी से ग्रहण किया और अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए साम्राज्यवादी सरकार का विरोध किया।
बिपिनचन्द्र और उनके साथी इतिहासकारों का इस बात पर बल है कि- सामाजिक परिवर्तनों का, चाहे वह आर्थिक व संस्थागत परिवर्तनों द्वारा पैदा हुई हो, कोई खास योगदान नहीं है। उनके अनुसार राजनीति एक अलग क्षेत्र है जिसमें शक्ति का प्रयोग बिल्कुल अपने अलग तरीके से होते हैं और जहां सामाजिक विधियों से बिल्कुल अलग हो सकती हैं। उनके अनुसार- विदेशी सरकार और तेजी से बढ़ता उनका क्षेत्रफल और स्वतंत्र क्षेत्रों में बढ़ता हस्तक्षेप और संवैधानिक सुधारों के माध्यम से भारतीयों को राजनीति अलग - थलग रखने की नीतियों के चलते आन्दोलनों को दबाते रहे नहीं तो भारत की स्वतंत्रता का स्वरूप दूसरा होता।[7]
मार्क्सवादियों ने राष्ट्रवादी विचारकों के इस सिद्धांत को अस्वीकार किया कि- संपूर्ण जनता भारत में विदेशी शासन के विरुद्ध संयुक्त थी। भारत में वर्ग उदय की पांच श्रेणीयों का विश्लेषण मार्क्सवादियों की देन है-
1- सामंत या उपसामंत जमींदार ज्यादातर उपनिवेशवाद से जुड़े थे।
2- एक नया उदित बुर्जुआवर्ग जो साम्राज्य के समर्थकों और विरोधियों में बांटा था और अपने गतिविधियों में संघर्ष और सौदेबाजी का काम करता था।
3- तीसरे क्रांतिकारी संभावित सर्वहारा वर्ग ।
4- किसान, जिसमें आंतरिक वर्ग भेद था।
5- एक बुद्धिजीवी वर्ग जो इन पूर्ववर्णित वर्गों से भिन्नभी था और मिलता जुलता भी था।
उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आंदोलन आर्थिक कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी रहा और शोषण के प्रतिक्रिया स्वरूप आया था।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रवाद सहगामी संस्कृति का नाम है जो गंगा-जमुनी तहज़ीब केरूप में विकसित हैं। बाकी इसको एकता के सूत्र में बांधने एवं एक छत्र केंद्रीय शासन के अधीन लाने के पीछे कुछ कारण जैसे- औपनिवेशिक प्रशासन, भारतीय पुनर्जागरण, पाश्चात्य शिक्षा एवं चिन्तन,प्रेस तथा समाचार-पत्रों की भूमिका, प्रेस तथा समाचार-पत्रों की भूमिका अहम थी। लेकिन कुछ तात्कालिक कारणों ने राष्ट्रवाद की भावना को हवा दी. जैसे – इल्बर्ट बिल विवाद, सिविल सर्विस की आयु-सीमा को कम करना(21 बर्ष से घटाकर 19 बर्षकरदिया), दक्षिण भारत में भयंकर अकाल के समय “दिल्ली दरबार” का आयोजन करना (1877 ई.) तथा शस्त्र अधिनियम (1878 ई.) आदि।

यह सही है कि 19वीं शताब्दी का भारत भाषा, धर्म, प्रदेश आदि के स्तर पर विभाजित था और ब्रिटिश शासकों ने शासन करने के लिए इस फूट का भरपूर लाभ भी उठाया।भारत एक भौगोलिक इकाई मात्र नहीं था, बल्कि इस विविधता में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक एकता भी अन्तर्निहित थी जिसने राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भ, विकास एवं सफलता की ओर अग्रसर होने में सहायता प्रदान की। विविधता के मूल में अन्तर्निहित यह राष्ट्रीय चेतना ही थी जिसने राष्ट्रवाद को प्रेरणा दी तथा यह चेतना विशिष्ट वर्ग की अपनी बौद्धिक सीमा को लांघते हुए सुदूर क्षेत्रों तक जा फैली। हालाँकि यह सच है कि अंग्रेजों द्वारा स्थापित प्रशासनिक एकता तथा आधुनिक विचारों के प्रचार-प्रसार ने भी एक सीमा तक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया, परन्तु यह भी सच है कि ब्रिटिश राज्य की स्थापना राष्ट्रवाद के बीजारोपण के लिए नहीं बल्कि औपनिवेशिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई थी। अंग्रेजों की यह स्पष्ट नीति रही कि भारतीयों में किसी भी प्रकार की एकता न बन पाए बल्कि उनमें फूट डालकर उन पर राज किया जाए. वस्तुतः इस उदीयमान राष्ट्र की प्रक्रिया न बुद्धिजीवी वर्ग, किसानों, श्रमिकों आदि को समान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विदेशी शासकों के विरुद्ध एकजुट किया. इसके अतिरिक्त लोकतंत्रीय, उदारवादी तथा राष्ट्रवादी आकांक्षा इस समय की प्रमुख घटनाएँ थीं, जिसे अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति तथा रूसी क्रांति के प्रेरणा मिल रही थी. इन घटनाओं ने गुलाम देशों को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *SEELAY, JOHN - The expansion of England,Cambridge University Press; Online publication date: August 201.-(पृष्ठ-28प)*
2. *STRACHEY, JOHN - India, its administration and progress-Publication/Creation. London , 1903-(पृष्ठ-5)*
3. *CHIROL, VALENTINE-"INDIA UNREST"-MACMILLAN AND CO., LIMITED 5T. MARTIN'S 5TRT, LONDON-(1910) पृष्ठ-322-323*
4. *RC MAJUMDAR -threepagesofIndia'sstruggleforfreedom"(Page-2,3)*
5. *MNROY - India's Transition(1922-Geneva)*
6. *K .M.PANIKKAR, Asia and western dominance*
7. *CHANDRA, BIPIN, Mukherjee Aditya, Mukherjee Mridula, "India After Independence"1999,*
8. *Dr.Sajiva "भारत में राष्ट्रवाद का उदय–एक समीक्षा" -2019*
9. *GOOGLE.COM -"भारतीय राष्ट्रवाद" WIKIPEDIA.*